पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य जी' द्वारा प्रणीत "बाल संस्कार" के द्वारा नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास

शोधार्थी
रश्मि साहू

मार्गदर्शिका
डॉ. प्रिज़्मा झरे

सह निर्देशक
डॉ. विनीत कुमार तिवारी

सारांशिका

शिक्षा और विद्या समाज एवं राष्ट्र के विकास की चहुंमुखी आधारशिला है शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान, कला, कौशल, भावनाओं, नैतिक मूल्य, और सामाजिक मूल्यों का व्यवस्थितिकरण करने से है। जिस शिक्षा में इनमें से किसी एक का विकास होता है वहां वह शिक्षा अधूरी मानी जाती है। वर्तमान तकनीकी शिक्षा में ज्ञान का विकास तो हो रहा है परंतु संस्कार भाव संवेदना नैतिक और सामाजिक मूल्य तथा आध्यात्मिक कार्यों की ओर बालक प्रवृत्त नहीं होते हैं|

नैतिक मूल्यों के विकास में यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को नैतिक व्यवहारों का अवसर प्रदान किया जाए। ज्ञान की नींव बालक की उदात्त भावनाओं में रहे इसके लिए यह आवश्यक है कि उचित वातावरण तथा उचित आदतों के विकास के लिए हम बालक के ज्ञान के आसपास उदात्त भावनाओं का उचित गढ़ विकसित करें जिससे उनकी नैतिकता और सामाजिकता संबंधी ज्ञान की जड़े मजबूत और पुष्ट हो। अनेक विद्वानों का विचार है कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास का कार्य घर, स्कूल तथा समूह, समुदाय और समाज का है। परंतु वर्तमान तकनीकी युग में आज के जटिल सामाजिक और नैतिक वातावरण और कठिन परिस्थितियों में जहां घर के सदस्यों को अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा तथा विकास को देखने समझने का अधिक समय ही नहीं मिल पाता है तथा जहां सामाजिक जीवन अत्यंत गतिशील एवं जटिल है, विद्यालय में पाठ्यक्रम और अन्य क्रियाओं गतिविधियां इतनी ज्यादा है कि हम केवल घर समाज व स्कूल से अपेक्षा नहीं कर सकते कि वे बालक के नैतिक मूल्य और सामाजिक मूल्य का उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण वहन करें तथा नैतिक और सामाजिक मूल्यों की योजनाबद्ध शिक्षा दे सके| ऐसी परिस्थिति में पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य जी' द्वारा प्रणीत बाल संस्कार के द्वारा नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसका विवेचन शोध पत्र में किया गया है।

कूट शब्दः-
बाल संस्कार, नैतिक, सामाजिक मूल्य एवं विकास।

परिचय -

विकास निरंतर अनवरत बिना किसी रूकावट के चलने वाली प्रक्रिया है | जीवन का शाश्वत सत्य और मूल्य है|मानवीय चेतना जिन दो प्रकार के मूल्यों की परिधि में पल्लवित होती है उनमें कुछ शाश्वत होते हैं और कुछ परिवर्तनशील | मूल्यों को जीवन का शाश्वत प्राण (आत्मा) कहा जा सकता है, क्योंकि कोई भी अज्ञानी अथवा अशिक्षित व्यक्ति अपने जीवन को विकासशील नहीं बना पाता |मनुष्य की स्थिति और परिस्थिति अन्य प्राणियों से सर्वथा भिन्न है वह समाज में रहता है उसकी एक सभ्यता, संस्कृति है | सुसंस्कृत आचरण की उससे अपेक्षा की जाती है साथ ही उसे इतना ज्ञान संपन्न भी होना चाहिए कि दुनिया जिस तेजी के साथ आगे बढ़ती जा रही है उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके | यह योग्यता तभी विकसित होती है जब वह नैतिक और सामाजिक मूल्यों का ज्ञान संपदा की दृष्टि से वह स्वयं कुछ उपार्जित करें, इस योग्य बनने के लिए उसे विरासत से कुछ संस्कार और जानकारी भी प्राप्त हो | ज्ञान और आचरण में बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रस्तुत कर सके, उसे सही अर्थों में विकास कहा जा सकता है | जब यह सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो ज्ञान अधूरा ही कहा जाएगा और मूल्य भी अविकसित होकर रह जाएगा |

(आचार्य श्रीराम शर्मा 1998)

बालक की बाल्यावस्था सीखने की सबसे बड़ी अवधि है | उस अवधि में अचेतन इतना अधिक क्रियाशील होता है कि जो कुछ ग्रहण करता है उसे आजीवन अपनाये रहता है बच्चों की प्रत्यक्ष समझ तो कमजोर होती है पर उसकी सूक्ष्म ग्रहण शक्ति इतनी अधिक होती है कि उसे आधारशिला कहा जाए तो कुछ इतियुक्त ना होगी | इसके इस अवस्था में सीखी गई अच्छी आदत बालक को संस्कारवान बनाती है |

(आचार्य श्रीराम शर्मा 1998)

इसी आधार पर वे अपनी युवावस्था में राष्ट्र के श्रेष्ठ चरित्रवान नागरिक बनते हैं बालक का श्रेष्ठ व्यक्तित्व अपनी प्रखरता, तेजस्विता तथा चरित्र निष्ठा समाज राष्ट्र एवं विश्व को एक नई दिशा धारा प्रदान करता है | यदि बालकों में बुरी आदतों का विकास होता है तो यह अपनी किशोरावस्था से ही आक्रामकता, अपराध, अत्याचार आदि अपराधिक प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाते हैं और यही नहीं ऐसे किशोर युवा होने पर समाज एवं राष्ट्र को पतन के गर्त में धकेल देते हैं |

बच्चों में अच्छी एवं बुरी आदतों का विकास इनके बाल्यावस्था में दी जाने वाली शिक्षा पर निर्भर करता है | **गोविंद चातक के शब्दों में** नैतिक और सामाजिक मूल्य सिर्फ ज्ञान का विकास नहीं है वह आंतरिक आवेगो और विकृतियों के रूपांतरण और शुद्धिकरण की विधि है | इसका समाधान देते हुए उन्होंने कहा है नैतिक मूल्य और सामाजिक मूल्य कुछ सीमा तक अभ्यास, आचरण, संस्कार और साधना से संभव है |

नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा की जिम्मेदारी ना तो केवल सरकार की है और ना ही सिर्फ कॉलेज, स्कूल की अपने दायित्व का सारा बोझ सरकारों एवं संस्थानों पर डाल देने वाला समाज कभी भी जागरूक-जीवन्त नहीं हो सकता | बच्चों को दिए जाने वाले मूल्य शिक्षा भी व्यक्ति, परिवार व समाज का अहम दायित्व है इसे पूरा करने के लिए हम सभी को एक साथ उठ खड़े होना होगा| ऐसा ना हुआ तो शिक्षा की और मूल्यों की संपूर्ण विधि- व्यवस्था केवल औद्योगिक ढांचा बनकर रह जाएगी जो इन दिनों हो रहा है|

(अखंड ज्योति अक्टूबर 2013) वर्तमान युग की शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं शिक्षा में तकनीकी, सूचना तकनीकी, विज्ञान की विविध नई शाखाओ के समावेश में एक नूतन क्रांति घटित हुई है शिक्षा के सभी साधन होने के बावजूद हम जीवन में पिछड़ गए उच्च शिक्षित होकर भी हम सामाजिक और नैतिक मूल्यों से बहुत दूर है |

(अखंड ज्योति 2005) आज हर हाल में सफलता और जीत इस सदी की जरूरत बनती जा रही है चाहे बच्चे हो या बड़े हर किसी को उम्मीदों के अरमानों के पंख लग गए हैं | ऐसे में नैतिक और सामाजिक मूल्य बच्चों में सुसंस्कारिता का जागरण एवं नैतिक और सामाजिक मूल्य का विकास स्वप्नवत प्रतीत होता है |

वर्तमान विश्व समाज की दशा को देखकर यह कहना गलत नहीं कि आज की शिक्षा मूल्यों में कहीं ना कहीं कोई कमी अवश्य रह गई है | जिसके कारण देश में ही राष्ट्रीय नैतिक चरित्र का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है अधिकांश व्यक्ति मूल्य और संस्कारों की ओर ध्यान न देकर धन अर्जन कैसे कर सके इस चक्कर में पड़े हैं | ऐसा क्यों इसका मुख्य कारण है (शिक्षा) मूल्य में गिरावट का अभाव शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुट होने से मनुष्य को संसार का वास्तविक ज्ञान होता है | उसे अपने जीवन के अंतिम उद्देश्य की जानकारी होती है उसमें समुचित आदतों का निर्माण होता है और घर, परिवार, विद्यालय, समाज में सुख व शांति का साम्राज्य स्थापित होता है |

आज इन विषम परिस्थितियों में आवश्यकता है ऐसे वातावरण तैयार करने की तथा ऐसी जीवन शैली के विकास की जो बालक को नैतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास में आधार स्तंभ का कार्य कर सके | वर्तमान में प्राचीन मूल्य शिक्षा परंपरा को आधुनिक रूप में डालकर ऐसे शिक्षा दी जानी चाहिए जो बालकों में नवीनता के साथ-साथ उन्हें संस्कारित भी कर ले | मूल्य और संस्कार भरने वाली कथाएं एवं आदर्श से उत्प्रेरित प्रेरणाप्रद शिक्षा जो बालकों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास में सहायक हो सकती है |

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य जी' के बाल संस्कार के द्वारा नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में क्या योगदान रहा बताने का प्रयास किया है | बाल संस्कार एक ऐसा प्रज्ञा प्रशिक्षण है जिनमें बच्चों को एक श्रेष्ठ वातावरण प्रदान करने के साथ-साथ एक आध्यात्मिक जीवन मूल्य का भी पालन करना सिखाया जाता है | पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार बाल संस्कार कार्यक्रम का उद्देश्य यह है कि स्कूल से बचा हुआ समय बच्चे आवारागर्दी तथा कुसंग में ना लगाने पाए | वह समय अच्छे वातावरण में नियोजित हो, मनोरंजन भी होता रहे और कुछ नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास भी होता जाए |

संस्कार

संस्कार समपूर्वक कृशञ धातु से घञ प्रत्यय होकर संस्कार शब्द निस्पन्न होता है जिसका अर्थ है संस्करणं सम्यक्कारणं वा संस्कार: अर्थात- परिष्कार करना अथवा भली प्रकार निर्माण करना संस्कार है | **(कर्मकांड भास्कर 2005)**

संस्कार अर्थात सद्गुणों का गुणा करना अर्थात अच्छे गुणों को बढ़ाना एवं दोषो का भागफल करना अर्थात दोषो को घटाना या दोषो का परिमार्जन करने से है | संस्कार कराना अर्थात अच्छी आदतों का विकास करना एवं बुरी आदतों को निकाल कर फेंकना | **भारतीय संस्कृति के अनुसार** हमारे प्रत्येक कार्य हमारे स्वभाव से परिलक्षित होने चाहिए | उदाहरण - केला खाकर छिलका फेंकना यह 'कृत्य' है, केला खाकर जिसको कूड़ेदान में फेंकना है यह 'प्रकृति' है | केला खाकर छिलका सड़क पर फेंक देना यह 'विकृति' है, अन्य व्यक्ति द्वारा रास्ते पर फेंका हुआ छिलका कूड़ेदान में फेंकना यह 'संस्कृति' संस्कार है |

नैतिक मूल्य

नैतिक मूल्य से अभिप्राय वे मूल्य जो नैतिकता की भावना से ओत-प्रोत होते हैं अथवा वह मूल्य जो जीवन की प्राथमिकताओं को निर्धारित करते हैं | नैतिक मूल्य उचित या अनुचित का वह प्रमाण है जो व्यक्ति के लिए उस संस्कृति द्वारा निर्धारित किए जाते हैं जिसमें वह व्यक्ति रहता है अर्थात व्यवहार के दो तरीके जिनको अंततः सामाजिक चरित्र में आंका जाता है नैतिक मूल्य कहलाते हैं |जो कल्याण के विपरीत होते हैं अनैतिक कहलाते हैं| **(आर डोरथी 1977)**

नैतिक शब्द अंग्रेजी के मोरल शब्द का अनुवाद है जो लेटिन के मोराई शब्द से बना है | मॉरस प्रक्षमत: रीति-रिवाज या आदत के रूप में प्रयुक्त हुआ और तत्पश्चात चरित्र के अर्थ में |

मानव में नैतिकता तब आती है जब वह अपनी बुराइयों को त्यागने की कोशिश करता है और ईश्वरी दिव्यता को अपने अंदर धारण करता है | भारतीय संस्कृति में नैतिकता को सेवा तथा तप के माध्यम से पुष्ट करने का विधान है सेवा भाव तथा तपश्चार्य के माध्यम से व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह तथा राग द्वेष आदि पाशविक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर प्रेम पूर्वक जीवन का अनुसरण करता है |

संस्कार को प्रभावित करने वाले तत्व -

नैतिक मूल्य के संस्कार क्षेत्र तीन होते हैं- व्यक्ति रूप में माँ, माँ का गर्भ और माता-पिता की गोद दोनों ही संस्कार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | दूसरा संस्कार निर्माण केंद्र है उसका सीमावर्ती वातावरण या क्रीडा स्थल जिसमें परिवार एवं समाज दोनों ही आ जाते हैं | और तीसरा गुरुकुल या विद्यालय |

सामाजिक मूल्य

सामाजिक मूल्य समाज के ऐसे प्रतिमान या अवधारणाएं हैं जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति या वस्तु के गुणावगुण का मूल्यांकन करते हैं सामाजिक मूल्यों को व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा सीखता है और उन्हीं के अनुरूप व्यवहार करने का प्रयत्न करता है |

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है और ऐसा होने के लिए उसे अपने अंदर अनेक मूल्यों का निर्माण एवं विकास करना होता है तभी वह समाज में रहने के लायक बनता है | समाज कल्याण हेतु व्यैक्तिक हितों का त्याग करना होता है | व्यक्ति को परहित, परोपकारी, त्याग, सेवा आदि को अपनाना होता है एक सामाजिक प्राणी हेतु निम्न सामाजिक मूल्य आवश्यक बताए गए हैं – सत्य, साहस, विश्व प्रेम, सर्वधर्म सम्मान, सामान्य सेवा, पवित्रता, विनम्रता, शांति, आनंद आदि |

सामाजिक मूल्य वे मूल्य व विचार जो हमें साथ में रहने के लिए प्रेरित करें | प्यार जुड़ाव लगाव आदि मूल्यों द्वारा सभी प्रकार के वस्तुओं का मूल्यांकन किया जा सकता है | चाहे वह भावनाएं हो या विचार इसके अलावा क्रियाओं, गुणों, वस्तुओं, व्यक्तियों, समूहो, लक्ष्यों या साधनों का भी मूल्य द्वारा अध्ययन किया जा सकता है |

सामाजिक मूल्य व्यवहार का सामान्य तरीका है और अच्छे या बुरे, सही या गलत का फैसला करता है | उदाहरण- हमेशा सच बोलो, सब पर दया करो, समान अधिकार प्राप्त करो आदि हमारे समाज में सामान्य मूल्य है

बाल संस्कार का नैतिक और सामाजिक मूल्य के साथ समन्वय

पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य जी' ने देश के वर्तमान शिक्षा पद्धति से अनेक कारणों से असंतुष्ट थे | उनके अनुरूप देश की शिक्षा पद्धति केवल बड़े-बड़े बाबुओं का निर्माण और आर्थिक निर्भरता प्रदान करने में ही सक्षम है | इसमें चरित्र गठन, भावनात्मक उत्कर्ष, विवेक का तीखापन तथा आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से केवल खोखलापन दिखता है **(अखंड ज्योति 2004)**

आज वर्तमान परिस्थिति में युग निर्माण योजना के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने नई पीढ़ी को गढ़ने के लिए बाल संस्कार कार्यक्रम चलाने की योजना दी | पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने 'बाल संस्कारशाला इस तरह चले' शीर्षक से एक छोटी सी किताब लिखी | जिसमें उन्होंने कहा है कि बाल संस्कार कार्यक्रम प्रत्येक प्रज्ञा पीठ, शक्तिपीठ, प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल द्वारा अनिवार्य गतिविधि के रूप में चलाई जाए | उनके द्वारा रचित वाङ्मय क्रमांक 63 – "हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण" सुसंस्कारों को पुनः स्थापित व जागृत करने के लिए मार्गदर्शन हेतु एक प्रकाश स्तंभ है | आचार्य जी ने समाज में नवीन पीढ़ी के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए इस तरफ गायत्री परिजनों का ध्यान प्रमुखता पूर्वक आकर्षित किया है तथा बाल संस्कार कार्यक्रम चलाने के स्पष्ट निर्देश दिए जिसका उल्लेख अखंड ज्योति सितंबर 2005 के पृष्ठ क्रमांक 56 में किया गया है |

कहने को तो लोग बहुत हैं जनसंख्या भी दिनों-दिन बढ़ रही है पर खरे- परखे उच्चस्तरीय व्यक्ति नहीं है | देश में सब कुछ है बस व्यक्ति नहीं है | आज के हिंदुस्तान में ना तो कोई गांधी है, ना सुभाष, ना लोकमान्य तिलक और ना विवेकानंद पर हम गढ़ेंगे और यह सब इस शरीर को छोड़ने के बाद करेंगे |

आचार्य जी के दिशा निर्देश को ध्यान में रखकर बाल संस्कार आरंभ हुआ | आचार्य जी के निर्देश थे कि बाल संस्कार का स्थान स्कूल नहीं है जहां अंग्रेजी गणित आदि विषयो की पढ़ाई होती हो, अपितु बाल संस्कार में केवल संस्कारपरक शिक्षा के द्वारा बालकों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक नैतिक व सामाजिक आध्यात्मिक शिक्षण दिया जाता है | बाल संस्कार जिसमें 8 से 12 वर्ष के बालक बालिकाओं को खेल-खेल में रोचक तरीके से स्वस्थ रहने की कला, ध्यान, प्राणायाम, गुरु, माता-पिता का आज्ञा पालन, एवं अनुशासन, महापुरुषों की जीवनी, प्रेरणास्पद संस्मरण, बाल नीति कथाएं, जीवन जीने की कला, मनोरंजक खेल, प्रतिभा संवर्धन के विविध प्रयोग आदि सिखाए जाते हैं | अंत में मूल्यांकन का आधार केवल बौद्धिक ना होकर भावनात्मक एवं चारित्रिक विकास का होता है | जिसमें नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास आचार्य, माता-पिता, पास-पड़ोस, सहपाठियों का अभिमत तथा अवलोकन द्वारा किया जाता है |

नैतिक मूल्य शिक्षार्थी सद और असद में अंतर करके विवेक सम्मत निर्णय लेने तथा सदाचार का प्रशिक्षण देने का नाम बाल संस्कार है | जिसके अंतर्गत बालकों में सत प्रवृत्तियों को जागृत करने के सभी तकनीक उपस्थित है जप, ध्यान, योग के माध्यम से आंतरिक शक्ति का जागरण होता है वहीं दूसरी तरफ प्रेरणाप्रद कथा कहानियों के माध्यम से सद्चित्त जागृत होता है | नैतिक और सामाजिक मूल्य हमारे आचरण में नहीं है बल्कि आचरण करने से देखी जाती है | आचरण द्वारा 'शिक्षण पद्धति' सबसे अच्छी है व्यवहार में अपनाये गए नियमों, सिद्धांतों, कार्यों आदि से चरित्र की रचना होती है |

<u>पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा बाल संस्कार पर नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का प्रभाव -</u>

बालक की प्रथम पाठशाला मां की गोद है और दूसरी पाठशाला विद्यालय और समाज ये तीन बालक के उन्नति और अवनति पर महत्वपूर्ण है | ये संस्कार मां की गर्भ से बच्चे में विद्यमान होते जाते हैं सूक्ष्म रूप में जो समय के साथ उसके अंदर सोए हुए संस्कार बाहरी समाज में अपने कार्य व्यवहार से प्रदर्शित किए जाते हैं | जो हमारे ज्ञान कर्म स्वभाव से हम खुद सम्मान प्राप्त कर लेते हैं | ये ज्ञान, कला, कौशल बालक में नैतिक मूल्य और सामाजिक मूल्यों के प्रभाव से बालक के अंदर प्रस्फुटित होते हैं जो बाल संस्कार कहलाते हैं | संस्कार और मूल्यों के द्वारा ही समाज में संत, शहीद, सुधारक हुए जो सबके लिए हितकर व्यक्ति हैं

और सबके कल्याण की भाव संवेदना अपने मन में रखते हैं | परंतु अब गौतम बुद्ध, गांधी, सुभाष एवं अन्य अवतारों की यह भूमि अब बांझ बंजर होती दिखाई देती है | इसके स्थान पर अब अपराधी, उदण्ड, दुर्व्यसनी व कुसंस्कारी पीढ़ी की तरफ पनप रहे हैं | कहा जाता है एक कुसंस्कारी बालक को देश समाज 100 वर्ष तक झेलता है | 'मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण' युग ऋषि **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी** के इस संकल्प का आधार है | संस्कार मनुष्य के भीतर के देवत्व को जगाने और धरा को स्वर्गोपम बनाने का कार्य केवल सुसंस्कारों और नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों की स्थापना एवं जागरण द्वारा ही किया जा सकता है |

संस्कार, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के संवर्धन में ऋषियों-मनीषियों का चिंतन -

प्राचीन काल की शिक्षा में नैतिकता उच्चादर्शो एवं चरित्र को प्राथमिकता दी जाती थी महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने चरित्र की रक्षा के संदर्भ में कहा है कि धन गया तो पुनः आ जाएगा किंतु चरित्र यदि नष्ट हो गया तो पुनः कभी भी ठीक नहीं हो सकता है

वशन्त यत्नेन संरक्षेत वित्तमायाति याति च |
अक्षीणो विन्ततः क्षीणो वश्तवस्तु हतो हतः || (महाभारत)

रैदास के शब्दों में –

संत संतोष अरु सदाचार जीवन का आधार
रविदास भाई नर देवते जिन त्यागे पंच विकार

इन्होंने शिक्षा द्वारा सदाचार को महत्वपूर्ण माना है संतोष व्रत जीवन शिक्षा का आदर्श होना चाहिए शिक्षा अभिमान को नष्ट करती है

नानक के अनुसार -

शिक्षा को मूल्य केंद्रित होना चाहिए चरित्र निर्माण के प्रति सतर्क और शिक्षित व्यक्ति में नम्रता, विनयशीलता होना चाहिए |

स्वामी विवेकानंद -

मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली प्रक्रिया का नाम शिक्षा है| 'शिक्षयेत विद्योपदीयतेऽनयेति शिक्षा' प्राणी जिस शिक्षा साधन प्रणाली से ज्ञान प्राप्त करें वह शिक्षा है |

स्वामी शिवानंद सरस्वती के अनुसार –

संस्कार और मूल्यों की सार्थकता उसके उद्देश्य को सन्निहित है नैतिक और सामाजिक मूल्य का उद्देश्य है - मनुष्य को भगवान और व्यक्ति से प्रेम करना सीखाना |

सच्चे मूल्य वही है जो विद्यार्थियों को सत्यवक्ता, सच्चरित्र, निर्भय विनम्र और दयावान बनाती है और उन्हें सदआचरण, सादा जीवन, उच्च विचार, आत्म बलिदान तथा ब्रह्म विद्या के पाठ पढ़ाती है | नीति शास्त्र के अनुसार-

विद्यां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

विद्या विनयशीलता प्रदान करती है, विनय से पात्रता निखरती है, पात्रता से धन मिलता है | धन के द्वारा धर्म, पुण्य हो सकते हैं और इन सब प्रयोजनों के हस्तगत होने में सुख ही सुख है |

मनु स्मृति में आचार्य मनु ने - गायत्री मंत्र जानने वाला व्यक्ति चरित्रवान है किंतु चरित्रहीन वेदों का ज्ञाता भी है तो वह चरित्रवान से कम ही है |

सावित्री मात्र सारोऽपि वरम विप्र सुयन्तितः |
नयन्तितस्त्रवेदोऽपि सर्वाशा सर्वश्वक्रयो || मनुस्मृति 02/118

में देह हूं उसे बुद्धि का नाम अविद्या है मैं देह नहीं चेतन आत्मा हूं इसका ज्ञान प्राप्त करना ही सच्ची विद्या है |

(अध्यात्म रामायण के अनुसार)

दहोऽहमिति या बुद्धि विद्या सा प्रकीर्तिता |
नाहे देहेशिचदात्मेति बुद्धि विर्द्धति मन्यते ||

वर्तमान सन्दर्भ में बाल संस्कार की उपादेयता

युग निर्माण योजना अभियान के प्रणेता पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने बाल संस्कार के कार्यक्रम के संचालन को बहुत महत्व दिया है | उन्होंने नारा दिया है - अध्यापक है युग निर्माता, छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता |

यह नारा सुसंस्कारिता धारण करने, कराने वाले अध्यापकों एवं छात्रों के लिए ही लागू होता है वर्तमान परिवेश में आदर्श परिवार निर्माण हेतु बालकों के संस्कार के लिए व्यवस्था बनाना अनिवार्य है | क्योंकि संस्कार प्राप्ति के मौलिक मध्यम परिवार समीपवर्ती वातावरण एवं विद्यालय की स्थिति आज चिंताजनक है |

बाल संस्कार बालकों को संस्कृति से परिचित कराने उसके अनुरूप ढालने, सचरित्र, सुगढ़, संस्कारवान नागरिक एवं देशभक्त बनाने का सरल माध्यम है जिसमें बालकों का समग्र नैतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास होता है | संस्कारों का निर्माण नियमित अभ्यास एवं आदतों के माध्यम से ही संभव है यह कार्य बालकों में संस्कार के माध्यम से सरल हो जाता है |

निष्कर्ष -

भारत देश को विश्व का जगतगुरु कहा जाता है इस देश के तत्वदर्शियों ने यह निचोड़ निकाला कि जीवन की सार्थकता नैतिक आचरणों में ही विद्यमान है| यह चिंतन हजारों वर्षों से गतिशील है इतिहास के पन्ने पलटे तो प्रतीत होता है कि राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती, महर्षि अरविंद, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक आदि ने भारतीय संस्कृति को अक्षुण्य बनाएं रखने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किया परंतु अपेक्षाकृत परिणाम न मिल सके फिर भी यह सिलसिला बंद नहीं हुआ |

इस क्रम में आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा के प्रयास उल्लेखनीय है उन्होंने नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक विशाल तत्व खड़ा किया और अपने प्रखर विचारों से जन जीवन में एक हलचल मचा दी | उसका मूल सूत्र विचार क्रांति अभियान है उनका मानना था कि व्यक्ति का अभ्युदय राष्ट्र का उत्थान और लक्ष्य प्राप्ति की स्थिति में शिक्षा का ही प्रमुख स्थान है | उन्होंने यह अनुभव किया कि किताबी शिक्षा जीवन का निर्माण नहीं कर सकती | इसे उन्होंने मात्र जानकारी की परिधि में रखा है | उन्होंने सोचा नैतिक सामाजिक मूल्यों का उद्देश्य जीवन निर्माण है इस निर्माण का प्रथम सोपान बाल्य काल में ही बनाया जाना ठीक होगा इस क्रम में बाल संस्कार का उद्घोष किया|

आज भारत के अधिकांश राज्यों में 5000 से अधिक संस्कार कार्यक्रम चलाए जा रहे यही तक नहीं समुद्र, देश-विदेश के पार भी बाल संस्कार की स्थापना की गई | उनका मुख्य उद्देश्य था संस्कार और नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्यों का समन्वय | वे उच्च कोटि के समाज सुधारक, युग निर्माता, दर्शन शास्त्री के साथ शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने संस्कार को एक नई शिक्षा दी जिसका उन्नयन विश्वविद्यालय तक हुआ | उन्होंने कुछ ऐसे सूत्रों का निर्धारण किया जिनके आधार पर नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को नई दिशा दी जा सकती है और संस्कार, आचरण को सभ्यता का पाठ पढ़ाया जा सकता है |

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *अखंड ज्योति (2005) ध्यानगंगा में सतत स्नान करते हैं सभी, संपादक डॉक्टर प्रणव पंड्या, जन जागरण प्रेस मथुरा |*
- *अखंड ज्योति (2013) शिक्षा प्रणाली के पंचशील, संपादक डॉ प्रणव पंड्या , जन जागरण प्रेस, मथुरा |*
- *आचार्य श्री राम शर्मा (1998) शिक्षा और विद्या, अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा |*
- *आचार्य श्रीराम शर्मा (1998) हमारी भावी पीढ़ी का और उसका नव निर्माण, अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा|*
- *जोशी धनंजय (2007) नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली |*
- *पाठक डॉक्टर आरपी (2008) भारतीय परंपरा में शैक्षिक चिंतन, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली |*
- *बिहारिया नम्रता एवं अविनाश, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य, उन्मुखीकरण पर प्रभाव एक अध्ययन |*
- *Interdisciplinary International Journal, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar.*
- *ब्रह्म वर्चस्व (2012) बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका, श्री वेद माता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज हरिद्वार*
- *श्री राम (1998) सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक क्रांति कैसे, अखंड ज्योति संस्थान मथुरा |*
- *कर्मयोगी डॉक्टर आरपी (2012) मूल्य परक शिक्षा, आर लाल बुक डिपो, मेरठ |*
- *मलैयाडॉक्टर के. सी. (2008) नैतिक शिक्षा शिक्षण आई एस इंटरनेशनल आगरा-2 |*
- *Http://balsanskar.com/hindi/lakh/10.2html*

Contributors Details:

शोधार्थी
रश्मि साहू

मार्गदर्शिका
डॉ. प्रिज़्मा झरे

सह निर्देशक
डॉ. विनीत कुमार तिवारी